MVS FOUNDATION

FREE NOTES

HINDI (201)

CHAPTERWISE NOTES

Sl. No.	खंड	पाठ (केवल पब्लिक परीक्षा वाले)	अंक
1	गद्य	**पाठ-1 :** बहादुर **पाठ-13 :** सुखी राजकुमार **पाठ-15 :** अंधेर नगरी पाठ -19 : शतरंज के खिलाड़ी	20
2	पद्य खंड	पाठ 8 : चंद्रगहना से लौटती बेर पाठ 14 : बूढ़ी पृथ्वी का दुख	10
2	लेखन कौशल	1. निबंध लेखन 2. पत्र लेखन 3. सार लेखन	7

घटक	विवरण	अंक
गद्य	**कुल पाठ- 9**	37
TMA असाइनमेंट	असाइनमेंट	20
कुल संभव स्कोर		**57** अंक

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

विषय- सूची

1	बहादुर
2	सुखी राजकुमार
3	अंधेर नगरी
4	शतरंज के खिलाड़ी
5	चंद्रगहना से लौटती बेर
6	बूढ़ी पृथ्वी का दुख
7	निबंध लेखन
8	पत्र लेखन
9	सार लेखन

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

1
बहादुर

कहानी का सार

बहादुर' एक नेपाली लड़के की कहानी है जो अपनी माँ की मार से तंग आकर शहर भाग आता है और लेखक के घर नौकर बन जाता है। शुरू में घर के सभी सदस्य उससे बहुत प्यार करते हैं, लेकिन धीरे-धीरे मध्यमवर्गीय (middle-class) दिखावे की प्रवृत्ति के कारण लेखक की पत्नी निर्मला और बेटा किशोर उसके साथ बुरा व्यवहार करने लगते हैं। उसे छोटी-छोटी बातों पर पीटा जाता है। अंत में, चोरी का झूठा इल्जाम लगने पर बहादुर बिना अपना सामान लिए घर छोड़कर चला जाता है। बहादुर के जाने के बाद परिवार को अपनी गलती का एहसास होता है और वे उसकी ईमानदारी और सेवा को याद कर पछताते हैं। यह कहानी मध्यमवर्ग की संवेदनहीनता और बाल-श्रम की समस्या को उजागर करती है।

मुख्य प्रश्न

Q1. लेखक के घर में बहादुर के साथ शुरू में और बाद में कैसा व्यवहार हुआ?

उत्तर - शुरू में बहादुर को बहुत स्नेह मिला, निर्मला उसे अपने बच्चों की तरह मानती थी। लेकिन समय बीतने के साथ, काम का बोझ बढ़ा और घर के सदस्यों (विशेषकर किशोर) ने उसे अपशब्द कहना और मारना शुरू कर दिया। उसकी छोटी गलतियों पर उसे बेरहमी से पीटा जाने लगा।

Q2. बहादुर अपने घर से क्यों भागा था?

उत्तर - बहादुर की माँ बहुत सख्त थी। एक बार बहादुर ने अपनी माँ की प्यारी भैंस को बहुत मारा था, जिससे गुस्सा होकर माँ ने बहादुर की वैसी ही पिटाई की। इस अपमान और दुख के कारण वह घर से भाग गया।

Q3. 'बहादुर' कहानी के आधार पर मध्यमवर्गीय परिवार की मनोवैज्ञानिक स्थिति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - मध्यवर्गीय परिवार दिखावे के लिए नौकर रखते हैं ताकि समाज में अपनी हैसियत दिखा सकें। शुरू में वे नौकर को परिवार का हिस्सा बताते हैं, लेकिन धीरे-धीरे उसे एक मशीन समझने लगते हैं। उनकी सहानुभूति केवल स्वार्थ तक सीमित होती है और वे अपनी गुस्सा नौकर पर मारपीट कर निकालते हैं।

Q4. बहादुर अपना सामान छोड़कर क्यों भाग गया?

उत्तर - जब बहादुर पर रिश्तेदारों ने ₹11 की चोरी का झूठा आरोप लगाया और उसे मारा-पीटा, तो उसका स्वाभिमान आहत हो गया। उसे लगा कि इस घर में उस पर कोई विश्वास नहीं करता और उसे सम्मान भी नहीं मिलता। इसी अपमान और दुख के कारण चुपचाप वहाँ से भाग गया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

Q5. कहानी के अंत में लेखक और उसका परिवार क्यों पछताते हैं?

उत्तर - बहादुर के जाने के बाद परिवार को अहसास हुआ कि वह अत्यंत ईमानदार और मेहनती था। उसने अपना सामान और अपनी तनख्वाह तक नहीं ली, जिससे सिद्ध हुआ कि वह चोर नहीं था। परिवार को अपनी मारपीट और झूठे संदेह पर ग्लानि हुई कि उन्होंने एक नेक इंसान खो दिया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2

सुखी राजकुमार

कहानी का सार

सुखी राजकुमार' एक ऐसी प्रतिमा की कहानी है जो शहर के ऊँचे स्तंभ पर लगी थी। जब राजकुमार जीवित था, वह महल के भीतर रहता था और उसने कभी दुख नहीं देखा था, इसलिए उसे 'सुखी राजकुमार' कहा जाता था। लेकिन मरने के बाद जब उसकी प्रतिमा शहर के बीच लगाई गई, तो उसने ऊँचाई से शहर की गरीबी, बीमारी और भुखमरी को देखा। उसका हृदय द्रवित हो उठा। उसने एक गौरैया की मदद से अपनी आँखों के कीमती नीलम, तलवार की मूंठ का लाल और शरीर की सोने की परतें गरीबों में बाँट दीं। अंत में, अत्यधिक ठंड के कारण गौरैया मर जाती है और राजकुमार का सीसा का बना दिल टूट जाता है। कहानी का संदेश यह है कि बाहरी सुंदरता से कहीं अधिक 'कर्म और त्याग का सौंदर्य' महान होता है।

मुख्य प्रश्न

Q1. राजकुमार के जीवित रहने और प्रतिमा बनने के बाद के दृष्टिकोण में क्या अंतर आया?

उत्तर - राजकुमार महल की चारदीवारी के भीतर रहता था जहाँ दुख का प्रवेश वर्जित था। वह बाहरी दुनिया की गरीबी और आंसुओं से पूरी तरह अनजान था। जब उसे शहर के ऊंचे स्थान पर स्थापित किया गया, तो उसने समाज की कड़वी सच्चाई देखी। उसने देखा कि लोग भूख और बीमारी से मर रहे हैं। इस दुख को देखकर उसकी संवेदनशीलता जागी और उसने अपना सब कुछ दान करने का निर्णय लिया।

Q2. गौरैया के व्यक्तित्व में राजकुमार के साथ रहकर क्या परिवर्तन आए?

उत्तर - शुरू में गौरैया स्वार्थी थी और मिस्र जाकर अपने दोस्तों के साथ मौज-मस्ती करना चाहती थी। लेकिन राजकुमार की परोपकारी भावना और उसकी आंसुओं भरी आँखों को देखकर गौरैया का हृदय बदल गया। उसने अपनी यात्रा त्याग दी और राजकुमार के दूत के रूप में काम किया। अंत में उसने राजकुमार के प्रति अपनी वफादारी निभाते हुए अपने प्राण तक त्याग दिए।

Q3. 'सुखी राजकुमार' कहानी में चित्रित नगर की विसंगतियों पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर - कहानी में नगर के दो विपरीत चेहरों को दिखाया गया है। एक तरफ महल हैं जहाँ अमीर लोग विलासिता का जीवन जी रहे हैं, और दूसरी तरफ तंग गलियाँ हैं जहाँ कलाकार भूख से तड़प रहे हैं और गरीब बच्चे ठंड में सिकुड़ रहे हैं। यह समाज के अमीर और गरीब वर्ग के बीच की गहरी खाई और प्रशासनिक अधिकारियों की संवेदनहीनता को दर्शाता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

Q4. ईश्वर ने राजकुमार और गौरैया को स्वर्ग में स्थान क्यों दिया?

उत्तर - ईश्वर की दृष्टि में सबसे कीमती चीज़ें 'त्याग' और 'निस्वार्थ प्रेम' हैं। राजकुमार ने दूसरों के दुख दूर करने के लिए अपनी सुंदरता और धन का त्याग किया, और गौरैया ने दोस्ती और मानवता के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया। इसीलिए उन्हें दुनिया की सबसे श्रेष्ठ वस्तुएं मानकर स्वर्ग में स्थान मिला।

Q5. इस कहानी के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर - कहानी संदेश देती है कि वास्तविक सुख दूसरों की सेवा करने में है। भौतिक सुंदरता (सोना-चाँदी) नश्वर है, लेकिन परोपकार का गुण अमर रहता है। सच्ची मानवता वही है जो दूसरों के आँसू पोंछ सके।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

3

अंधेर नगरी

कहानी का सार

अंधेरे नागरी नाटक एक ऐसी नगरी का चित्रण करता है जहाँ का राजा मूर्ख और विवेकहीन है। यहाँ 'टक्के सेर भाजी, टक्के सेर खाजा' यानी हर चीज़ का भाव एक समान है। महंत जी अपने शिष्यों को चेतावनी देते हैं कि जहाँ गुण-अवगुण में अंतर न हो, वहाँ रहना खतरनाक है। गोवर्धन दास लालच में वहीं रुक जाता है। जब एक दीवार गिरने से बकरी मर जाती है, तो राजा न्याय के नाम पर बेगुनाह गोवर्धन दास को फांसी पर चढ़ाने का आदेश देता है क्योंकि उसकी गर्दन फांसी के फंदे के लायक मोटी थी। अंत में महंत जी अपनी बुद्धि से राजा को स्वयं फांसी पर चढ़ने के लिए मजबूर कर देते हैं। यह नाटक भ्रष्ट शासन व्यवस्था पर कड़ा प्रहार है।

मुख्य प्रश्न

Q1. महंत ने अंधेर नगरी में रहने से क्यों मना कर दिया?

उत्तर - महंत जी ने देखा कि वहाँ कपूर और घास एक ही भाव बिक रहे हैं। उनका मानना था कि जहाँ अच्छे और बुरे इंसान में कोई अंतर न हो और जहाँ की शासन-व्यवस्था मूर्खतापूर्ण हो, वहाँ कभी भी जान का खतरा हो सकता है।

Q2. गोवर्धन दास फांसी के फंदे तक कैसे पहुँचा?

उत्तर - दीवार गिरने के मामले में जब असली अपराधी नहीं मिला, तो राजा ने हुक्म दिया कि किसी भी मोटे आदमी को पकड़कर फांसी दे दो। गोवर्धन दास नगरी की सस्ती चीज़ें खाकर मोटा हो गया था, इसलिए सैनिकों ने उसे पकड़ लिया।

Q3. इस नाटक के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश दिया है??

उत्तर - नाटक का संदेश यह है कि जिस देश का राजा मूर्ख और भ्रष्ट होता है, वहाँ की प्रजा कभी सुखी नहीं रहती। यह शासन में 'विवेक' और 'न्याय' की कमी पर कड़ा व्यंग्य करता है।

Q4. राजा ने स्वयं फांसी पर चढ़ने का निर्णय क्यों लिया?

उत्तर - महंत ने राजा से झूठ कहा कि इस शुभ मुहूर्त में जो मरेगा, वह सीधे स्वर्ग का राजा बनेगा। मूर्ख राजा ने स्वर्ग के लालच में आकर खुद को फांसी पर चढ़वा लिया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

Q5. इस नाटक में 'टक्के सेर भाजी, टक्के सेर खाजा' का क्या अर्थ है?

उत्तर - इसका मतलब है कि उस राज्य में गुणी और मूर्ख, या कीमती और सस्ती वस्तुओं का मूल्य एक समान था। यह पूरी तरह से अव्यवस्था और मूर्खतापूर्ण शासन का प्रतीक है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4

शतरंज के खिलाड़ी

कहानी का सार

कहानी नवाब वाजिद अली शाह के समय के लखनऊ की है। मिर्ज़ा सज्जाद अली और मीर रौशन अली दो जागीरदार हैं जो दिन-रात शतरंज खेलने में डूबे रहते हैं। उन्हें न अपने परिवार की चिंता है और न ही देश की। जब ब्रिटिश सेना लखनऊ पर कब्ज़ा करने आती है, तो ये दोनों कायरों की तरह शहर से बाहर जाकर छिपकर शतरंज खेलते हैं। अंत में, खेल की एक चाल को लेकर वे आपस में लड़ पड़ते हैं और एक-दूसरे की जान ले लेते हैं। प्रेमचंद ने दिखाया है कि कैसे शासक वर्ग की विलासिता और व्यक्तिगत अहंकार ने देश को गुलाम बना दिया।

मुख्य प्रश्न

Q1. मिर्ज़ा और मीर के चरित्र की मुख्य कमियाँ क्या थीं?

उत्तर - वे दोनों अत्यंत लापरवाह, विलासी और कर्तव्यहीन थे। उन्हें देश की राजनीति और समाज की समस्याओं से कोई लेना-देना नहीं था, वे केवल अपने मनोरंजन (शतरंज) में खोए रहते थे।

Q2. इस कहानी से उस समय के शासक वर्ग की क्या कमी पता चलती है?

उत्तर - "शतरंज के खिलाड़ी" कहानी से पता चलता है कि उस समय के जागीरदार और नवाब बहुत ही विलासी और आलसी थे। वे अपने कर्तव्यों को भूलकर केवल मनोरंजन में डूबे थे, जिसके कारण अंग्रेज आसानी से देश पर कब्ज़ा कर पाए।

Q3. मिर्ज़ा और मीर की पत्नियाँ उनसे क्यों नाराज रहती थीं?

उत्तर - क्योंकि वे दोनों सारा समय शतरंज में बिताते थे और घर की जिम्मेदारियों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते थे। शतरंज के कारण उनके घर का माहौल खराब हो गया था और वे घर के कामों में हाथ नहीं बँटाते थे

Q4. जागीरदारों की शतरंज के प्रति दीवानगी का प्रजा पर क्या असर पड़ रहा था?

उत्तर - जागीरदार शतरंज खेलने में इतने लगे रहते थे कि उन्हें राज्य और प्रजा की कोई चिंता नहीं थी। वे अपना समय खेल और आराम में बिताते थे। इसलिए शासन ठीक से नहीं चल रहा था, प्रजा की समस्याएँ बढ़ रही थीं और समाज में आलस तथा अव्यवस्था फैल रही थी।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

Q5. प्रेमचंद ने "शतरंज के खिलाड़ी कहानी के माध्यम से क्या संदेश दिया है?

उत्तर - लेखक ने चेतावनी दी है कि जो समाज अपने कर्तव्यों को छोड़कर केवल सुख-सुविधाओं और फालतू के शौक में डूबा रहता है, वह अपनी आज़ादी खो देता है और विनाश की ओर बढ़ता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

5

चंद्रगहना से लौटती बेर

कहानी का सार

यह कविता प्रकृति की सुंदरता का वर्णन करती है। कवि एक खेत की मेड़ पर बैठा है और चारों ओर के नज़ारे देख रहा है। वह चने के पौधे को एक छोटे दूल्हे के रूप में देखता है जिसके सिर पर गुलाबी फूल रूपी पगड़ी है। पास ही अलसी का पौधा एक ज़िद्दी नायिका जैसा लग रहा है। सरसों की फसल पक गई है, जिसे कवि 'सयानी कन्या' कहता है जो शादी के लिए तैयार है। कवि को गाँव का यह शांत और प्रेमपूर्ण वातावरण शहर की मतलबी दुनिया से कहीं ज़्यादा अच्छा लगता है। वह तालाब के किनारे बगुले और पत्थर जैसे दृश्यों के माध्यम से समाज की बुराइयों पर भी छोटा सा कटाक्ष करता है।

मुख्य प्रश्न

Q1. कवि ने चने के पौधे का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर - कवि कहता है कि चना एक बीते के बराबर छोटा सा पौधा है। उसके ऊपर खिले गुलाबी फूल ऐसे लगते हैं जैसे उसने गुलाबी पगड़ी पहन रखी हो और वह दूल्हे की तरह सज-धज कर खड़ा हो

Q2. सरसों को 'सयानी' क्यों कहा गया है?

उत्तर - सरसों की फसल पूरी पक गई है और उस पर पीले फूल आ गए हैं। पीला रंग शादी का प्रतीक माना जाता है, इसलिए कवि उसे एक ऐसी कन्या कहता है जो अब बड़ी (सयानी) हो गई है और शादी के लिए तैयार है।

Q3. बगुला किसका प्रतीक है और वह क्या करता है?

उत्तर: बगुला समाज के ढोंगी और धोखेबाज़ लोगों का प्रतीक है। वह पानी में ध्यान लगाने का नाटक करता है, लेकिन जैसे ही उसे मछली दिखती है, वह उसे तुरंत पकड़कर खा जाता है।

Q4. कवि को शहर की तुलना में गाँव क्यों पसंद है?

उत्तर - कवि को गाँव इसलिए अधिक पसंद है क्योंकि शहर में लोग ज़्यादातर पैसे और व्यापार की ही बात करते हैं। वहाँ सच्चा प्रेम और अपनापन कम दिखाई देता है। इसके विपरीत गाँव का जीवन सादा और शांत होता है। वहाँ प्रकृति की सुंदरता, प्रेम और शांति का वातावरण मिलता है।

Q5. 'चाँदी का बड़ा सा गोल खंभा' किसे कहा गया है?

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

उत्तर - तालाब के साफ पानी में जब सूरज की किरणें पड़ती हैं, तो उनका प्रतिबिंब पानी में चमकने लगता है। यह चमकती हुई रोशनी देखने में चाँदी के बड़े गोल खंभे जैसी लगती है। इसलिए कवि ने इसे 'चाँदी का बड़ा सा गोल खंभा' कहा है।

सप्रसंग व्याख्या-

और पैरों के तले है एक पोखर,

उठ रहीं इसमें लहरियाँ,

नील तल में तो उगी है घास भूरी,

ले रही वह भी लहरियाँ।

एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा,

आँख को है चकमकाता।

और पैरों के तले .... को है चकमकाता।

उत्तर-

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियों को 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता से लिया गया हैं, जिसके रचयिता **"केदारनाथ अग्रवाल"** हैं। यह काव्य 'फूल नहीं, रंग बोलते है' संग्रह में सम्मिलित हैं। इसमें पोखर के दृश्य का चित्रण किया गया है।

व्याख्या : कवि को एक तालाब दिखाई दे रहा है, जिसमें छोटी-छोटी लहरें उठ रही हैं। तालाब का तल नीला है, लेकिन उसमें भूरे रंग की घास भी उगी है, जो लहरों के साथ हिल रही है। साँझ (संध्याकाल) का समय है और तालाब की सतह पर चाँद का प्रतिबिंब चमक रहा है। कवि ने चाँद को 'एक चाँदी का बड़ा गोल खंभा' कहा है। चाँद को खंभा जैसा दिखने का कारण यह है कि हिलते पानी में चाँद का प्रतिबिंब लंबा और खंभा जैसा दिखता है, जबकि शांत पानी में वह केवल एक गोल आकार का लगता है। लहरों वाले तालाब में किरणों के फिसलने से उसमें लंबाई प्रतीत होती है। इसलिए कवि को चाँद बड़ा और गोल खंभा जैसा महसूस होता है। यह कवि की सूक्ष्म दृष्टि और कल्पना का उदाहरण है।

विशेष-

- सरल-सहज शब्दों का प्रयोग किया गया हैं।
- काव्य में प्रकृति-सौंदर्य तथा ग्रामीण परिवेश के मोहक वातावरण को चित्रित किया गया हैं।
- काव्य में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया गया हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

6
बूढ़ी पृथ्वी का दुख

कहानी का सार

ये कविता पर्यावरण के विनाश पर आधारित है। कवयित्री पृथ्वी को एक 'बूढ़ी माँ' मानती है जो बहुत दर्द में है। पेड़ों का कटना, नदियों का गंदा होना और पहाड़ों को धमाकों से तोड़ना पृथ्वी को बहुत चोट पहुँचाता है। कवित्री कहती हैं कि क्या हमें पेड़ों के कटने पर उनकी चीख सुनाई देती है? क्या हम नदियों का दुख महसूस करते हैं? मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति को खत्म कर रहा है, लेकिन वह यह भूल रहा है कि प्रकृति के बिना वह खुद भी ज़िंदा नहीं रह पाएगा। यह कविता हमें पर्यावरण और मानव जीवन को बचाने के लिए प्रेरित करती है।

मुख्य प्रश्न

Q1. पृथ्वी को 'बूढ़ी' क्यों कहा गया है?

उत्तर - 'बूढ़ी पृथ्वी का दु:ख' कविता में पृथ्वी को बूढ़ी इसलिए कहा गया है क्योंकि पर्यावरण का नुकसान होने से उसकी स्थिति कमजोर और बीमार हो गई है। जब पेड़ कटते हैं, नदियाँ सूखती हैं, हवा और पानी प्रदूषित होते हैं, और पहाड़ नष्ट किए जाते हैं, तो पृथ्वी की प्राकृतिक सुंदरता कम हो जाती है, ठीक वैसे ही जैसे बुढ़ापे में शरीर कमजोर हो जाता है।

Q2. पेड़ों के कटने पर कवयित्री क्या महसूस करती है?

उत्तर - कवयित्री को पेड़ों के कटने पर उनकी 'चीख' सुनाई देती है। वह कहती है कि पेड़ केवल लकड़ी नहीं हैं, उनमें भी जान है और जब कुल्हाड़ी उन पर चलती है, तो उन्हें बहुत दर्द होता है।

Q3. हवा और नदियों की क्या हालत हो गई है?

उत्तर - प्रदूषण के कारण हवा ज़हरीली हो गई है और नदियाँ इतनी गंदी हो गई हैं कि वे अपना मुँह छिपाकर रो रही हैं। मनुष्य ने अपने कचरे से प्रकृति के शुद्ध जल और हवा को नष्ट कर दिया है।

Q4. 'पहाड़ का सीना दहलना' का क्या मतलब है?

उत्तर - आज के समय में पहाड़ों को बारूद और धमाकों से तोड़ा जा रहा है। इन धमाकों से पहाड़ काँप उठते हैं। मनुष्य अपने लालच के लिए प्रकृति की शांति को भंग कर रहा है।

Q5. इस कविता से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर - शिक्षा यह है कि हमें पेड़ों को नहीं काटना चाहिए और प्रदूषण को रोकना चाहिए। यदि हमने अपनी धरती (पृथ्वी) को नहीं बचाया, तो भविष्य में हमारा जीवन खतरे में पड़ जाएगा।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

Q6. 'बूढ़ी पृथ्वी का दुःख' कविता में कवयित्री ने किन विषयों पर चिंता प्रकट की है?

उत्तर -'बूढ़ी पृथ्वी का दुःख' कविता में कवयित्री ने घटते वृक्ष, हरियाली की कमी, नदियों में घटते पानी और बढ़ते प्रदूषण पर चिंता प्रकट की है। उन्होंने पहाड़ों के प्रति मनुष्य के क्रूर व्यवहार और पर्यावरण पर इसके विनाशकारी प्रभाव को भी उजागर किया है।

सप्रसंग व्याख्या

> **थोड़ा-सा वक्त चुरा कर बतियाया है कभी**
> **कभी शिकायत न करने वाली**
> **गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?**
> **अगर नहीं, तो क्षमा करना !**
> **मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है !!**

थोड़ा-सा वक्त .... पर संदेह है !!

उत्तर –

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता से ली गई हैं, जिसकी लेखिका निर्मला पुतुल हैं। इन पंक्तियों में कवयित्री ने पृथ्वी को एक बूढ़ी औरत के रूप में दिखाकर उसके दुख को व्यक्त किया है और मनुष्य को उसके कर्तव्य का स्मरण कराया है।

व्याख्या : कवयित्री कहती हैं कि आज के लोग अपनी सुविधाओं और कामों में इतने व्यस्त हो गए हैं कि उनके पास अपने बुजुर्गों से बात करने और उनका दुख-सुख पूछने का भी समय नहीं है। ठीक इसी तरह मनुष्य पृथ्वी की पीड़ा को भी नहीं समझ रहा है। पेड़ कट रहे हैं, नदियाँ सूख रही हैं और हवा-पानी प्रदूषित हो रहे हैं, जिससे पृथ्वी कमजोर और बीमार होती जा रही है। कवयित्री कहना चाहती हैं कि मनुष्य को पृथ्वी की देखभाल करनी चाहिए। यदि कोई ऐसा नहीं करता, तो उसके सच्चे इंसान होने पर संदेह होता है।

विशेष-

- बातचीत व प्रश्न शैली का प्रयोग किया गया हैं।
- गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी में मानवीकरण का प्रयोग किया गया है।
- भावों के अनुकूल भाषा-प्रयोग है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

7

निबंध लेखन

निबंध : निबंध का अर्थ है किसी विषय पर अपने विचारों को सही क्रम में बांधकर लिखना। एक अच्छा निबंध वह है जो छोटे और प्रभावशाली वाक्यों में लिखा गया हो। निबंध के मुख्य रूप से तीन भाग होते हैं: भूमिका (विषय की शुरुआत), विषय-वस्तु (विस्तार से जानकारी), और उपसंहार (निष्कर्ष या सुझाव)। परीक्षा में निबंध लगभग 300 शब्दों में लिखना होता है।

मुख्य प्रश्न

Q. निबंध के मुख्य अंग कौन-से हैं? उत्तर: निबंध के तीन मुख्य अंग हैं:

1. भूमिका: इसमें विषय का परिचय दिया जाता है।
2. विषय-वस्तु: इसमें विषय के अलग-अलग पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की जाती है।
3. उपसंहार: इसमें पूरे निबंध का निचोड़ और अपने सुझाव दिए जाते हैं।

निबंध के उदाहरण

Q. निम्नलिखित विषय में लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए।

(क) अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

(ख) भारत के बदलते गाँव

उत्तर –

निबंध लेखन का फॉर्मेट

शीर्षक

1. भूमिका : इसे प्रस्तावना भी कहते हैं। इसमें विषय का परिचय दिया जाता है।

....

....

....

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2. विषय-वस्तु / विस्तार : यह निबंध का मुख्य भाग है जहाँ विषय को विस्तार से समझाया जाता है।

....

....

.... I

3. उपसंहार : यह पूरे निबंध का निचोड़ और निष्कर्ष होता है

....

....

.... I

(क) अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

भूमिका

योग भारत की प्राचीनतम और अमूल्य देन है, जो न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य के लिए भी उपयोगी है। यह केवल एक व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक कला है। भारत सरकार के प्रयास से संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया, जिससे यह पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हुआ।

विषय-वस्तु

योग का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। पतंजलि ऋषि द्वारा रचित 'योगसूत्र' को योगशास्त्र का आधार माना जाता है। योग शब्द का अर्थ है – जोड़ना, यानी शरीर, मन और आत्मा का मेल। यह हमें तनाव, चिंता, थकान और रोगों से दूर रखता है।

21 जून को योग दिवस मनाने का उद्देश्य केवल व्यायाम को बढ़ावा देना नहीं है, बल्कि जीवन में संतुलन, अनुशासन और आंतरिक शांति की भावना को स्थापित करना भी है। इस दिन देश-विदेश में लाखों लोग एक साथ योगासन करते हैं, जिससे वैश्विक एकता और भारतीय संस्कृति का संदेश फैलता है।

योग के प्रमुख अंगों में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि शामिल हैं। आजकल जीवनशैली की बीमारियों से जूझती दुनिया के लिए योग एक सशक्त समाधान है।

उपसंहार

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा की वैश्विक स्वीकार्यता का प्रतीक है। हमें इसे अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए, ताकि तन और मन दोनों स्वस्थ रह सकें। योग अपनाकर हम न केवल अपने जीवन को सुधर सकते हैं, बल्कि समाज और विश्व को भी एक सकारात्मक दिशा दे सकते हैं

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

8

पत्र लेखन

पत्र लेखन : पत्र अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम है। पत्र मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं: औपचारिक (Formal) और अनौपचारिक (Informal)। औपचारिक पत्र अधिकारियों, संपादकों या संस्थानों को लिखे जाते हैं, जिनमें 'विषय' लिखना बहुत जरूरी होता है। अनौपचारिक पत्र अपने मित्रों और रिश्तेदारों को लिखे जाते हैं, जिनमें निजी बातें और प्रेमपूर्ण भाषा का प्रयोग होता है। पत्र में स्पष्टता और शिष्टाचार का होना बहुत आवश्यक है।

औपचारिक पत्र का फॉर्मैट

पता ....

दिनांक ....

सेवा में,

पद (संपादक महोदय)

विभाग (नवभारत टाइम्स)

पता (दिल्ली)

विषय ....

संबोधन (महोदय/महोदया/श्रीमान/मान्यवर)

विषय वस्तु (2-3 Para)

पहला - "सविनय निवेदन यह है कि" इस वाक्य शुरु कटना चाहिए, फिर थोड़ा अपने बारे में बताना चाहिए।

दूसरा - "आपसे विनम्र निवेदन है कि" लिख कर आप उनसे क्या उम्मीद रखते हैं, उसे लिखें। MIDDLE

तीसरी - "मैं आशा करता हूँ"/"आपसे नेवेदन है कि" **CONCLUSION**

धन्यवाद ➔ आभार व्यक्त

भवदीय, भवदीया,आपका आजाकारी शिष्य ➔ समापन

(क.ख.ग) (नाम अगर दिया है) ➔ खुद का नाम

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

Q. आप 29/5 संस्कार अपार्टमेंट, सेक्टर-14 टोहिणी, दिल्ली के निवासी हैं। आप चाहते हैं कि लोग दीपावली में पटाखों का कम से कम प्रयोग करें। पटाखों से होने वाली हानियों से अवगत कटाते हुए नवभारत टाइम्स के संपादक को पत्र लिखिए।

उत्तर -

29/5 संस्कार अपार्टमेंट

सेक्टर-14 रोहिणी, दिल्ली

23 फरवरी 2025

सेवा में,

संपादक महोदय

नवभारत टाइम्स

बहादुरशाह जफ़र मार्ग,

विषय - पटाखों से होने वाली हानि से अवगत कराने के संबंध में

महोदय

"सविनय निवेदन यह है कि" मैं आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से लोगों का ध्यान पटाखों से होने वाली हानियों की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। जैसा कि हम सभी जानते हैं, दीपावली खुशियों और प्रकाश का पर्व है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में यह पर्व अत्यधिक ध्वनि और वायु प्रदूषण का कारण बनता जा रहा है। पटाखों के जलने से उत्पन्न ध्वनि प्रदूषण न केवल बुजुर्गों, बीमार व्यक्तियों और छोटे बच्चों के लिए कष्टदायक होता है, बल्कि पशु-पक्षियों को भी इससे गंभीर परेशानी होती है। हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी परंपराओं और उत्सवों को पर्यावरण के अनुकूल बनाएं। दीपावली के पावन अवसर पर दीयों, मोमबत्तियों और सजावट के अन्य साधनों के माध्यम से प्रकाश और आनंद फैलाना अधिक उचित है।

अतः, मैं आपके माध्यम से सभी पाठकों से विनम्र अपील करता हूँ कि वे इस दीपावली पर पटाखों का कम से कम उपयोग करें और पर्यावरण की रक्षा में अपना योगदान दें। आशा है कि आप इस विषय को अपने समाचार पत्र में उचित स्थान देंगे।

धन्यवाद

सादर,

सोनू

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

औपचारिक पत्र का फॉर्मैट

पता ....

दिनांक ....

सेवा में,

पद (संपादक महोदय)

विभाग (नवभारत टाइम्स)

पता (दिल्ली)

विषय ....

विषय वस्तु (2-3 Para)

पहला - "सविनय निवेदन यह है कि" इस वाक्य शुरु कटना चाहिए, फिर थोड़ा अपने बारे में बताना चाहिए।

दूसरा - "आपसे विनम्र निवेदन है कि" लिख कर आप उनसे क्या उम्मीद रखते हैं, उसे लिखें। MIDDLE

तीसरी - "मैं आशा करता हूँ"/"आपसे नेवेदन है कि" CONCLUSION

धन्यवाद → आभार व्यक्त

भवदीय, भवदीया,आपका आजाकारी शिष्य → समाप

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

Q. अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए तथा उसकी पढ़ाई के बारे में जानकारी मांगिए।

34/160, टाम नगर,

दिल्ली।

दिनांक - 29-05-2023

प्रिय छोटे भाई,

स्नेहपूर्ण नमस्कार!

मैं आशा है कि तुम स्वस्थ और खुशहाल होगे। काफ़ी दिनों से तुम्हारा पत्र नहीं मिला, इसलिए तुम्हारी पढ़ाई और हालचाल के बारे में जानने की उत्सुकता हो रही है। तुम्हारी कक्षाएँ कैसी चल रही हैं? परीक्षा की तैयारी ठीक से हो रही है या नहीं? यदि किसी विषय में कोई कठिनाई आ रही हो, तो निसंकोच बताना, मैं तुम्हाटी मदद करने की पूटी कोशिश करंगा। माँ-पापा भी तुम्हारी पढ़ाई को लेकर चिंतित रहते हैं, इसलिए उन्हें भी अपनी प्रगति के बारे में बताना न भूलना। समय का सही उपयोग करो और पूरी लगन से अध्ययन करो। तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारा भाई

[मनीष]

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

9
सार लेखन

Q. निम्नलिखित गद्यांश का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए।

कहा जाता है कि मानव का आरंभिक जीवन अधिक लचीला और प्रशिक्षण के लिए विशेषकर अनुकूल होता है। यदि माता-पिता, अध्यापक और सरकार - तीनों मिलकर प्रयास करें, तो वे बालक को जैसा चाहें, वैसा वातावरण देकर उसकी जीवन-दिशा का निर्धारण कर सकते हैं। जीवन का यह समय मिट्टी के उस कच्चे घड़े के समान होता है, जिसके विकारों को मनचाहे ढंग से ठीक किया जा सकता है। लेकिन जिस तरह पके हुए घड़ों में पाए जाने वाले दोषों में सुधार करना असंभव है, उसी तरह यौवन की दहलीज़ को पार कर बीस-पच्चीस वर्ष के युवक के अंदर आमूल परिवर्तन लाना यदि असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है। कच्ची मिट्टी किसी भी साँचे में ढालकर किसी भी नए रूप में बदली जा सकती है, लेकिन जब वह एक बार, एक प्रकार की बन गयी, तब उसमें परिवर्तन लाने का प्रयास बहुत ही कम सफल हो पाता है। किसी लड़के या लड़की के व्यक्तित्व के निर्माण का मुख्य उत्तरदायित्व हमारे समाज, हमारी सरकार और स्वयं माता-पिता पर है तथा बहुत कुछ स्वयं लड़के या लड़की पर भी। कोई भी व्यक्ति अपने ध्येय में तभी सफल हो सकता है, जब वह अपने जीवन के आरंभिक दिनों में भी वैसा करने का प्रयास करे। इस दृष्टि से विद्याध्ययन का समय ही मानव-जीवन के लिए विशेष महत्त्व रखता है। हम सभी का और स्वयं विद्यार्थियों का भी यही कर्त्तव्य है कि सभी इस तथ्य को हमेशा अपने सामने रखें।

उत्तर - बाल्य-काल मानव की वह अवस्था है, जिसमें उसके जीवन को मनचाहे ढंग से मोड़ा जा सकता है। युवावस्था प्राप्ति के बाद, उसकी जीवन -दिशा को बदलना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। कच्ची मिट्टी से इच्छा के अनुसार आकृति बना सकते हैं, पक जाने पर उसका रूप - परिवर्तन असंभव है। बालक हो या बालिका, उसके जीवन-निर्माण का उत्तरदायित्व सरकार, समाज और माता-पिता के कंधों पर है। उसके अपने प्रयास भी महत्त्वपूर्ण हैं। प्रारंभ से उस दिशा में प्रयत्न करने पर ही सफलता मिलती है।

Q. निम्नलिखित गद्यांश का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए।

हमारे देश में अशिक्षित प्रौढ़ों की संख्या करोड़ों में है। यदि हम किसी प्रकार इनके मानस-मंदिरों में शिक्षा की ज्योति जगा सकें, तो सबसे महान धर्म और सबसे पवित्र कर्त्तव्य का पालन होगा। रेलगाड़ी और बिजली की बत्ती से भी अपरिचित लोगों का होना हमारी प्रगति पर कलंक है। प्रौढ़-शिक्षा योजना इनको प्रबुद्ध नागरिक बनाने की दिशा में क्रियाशील है। इस योजना से गाँवों में एक सीमा तक आत्मनिर्भरता आएगी। हर बात के लिए शहरों की ओर ताकने की प्रवृत्ति समाप्त होगी। निरर्थक रूढ़ियों और अंधविश्वासों में फँसे हुए और अपनी गाढ़े पसीने की कमाई को नगरों की भेंट चढ़ाने वाले ये हमारे भाई प्रौढ़ शिक्षा से निश्चित ही सचेत और विवेकी बनेंगे। स्वास्थ्य, सफ़ाई, उन्नति, कृषि तथा आपसी सद्भावना के प्रति प्रौढ़ शिक्षा इनको जागरूक बना सकती है। इससे इनकी मेहनत की कमाई डॉक्टरों की जेबों में जाने से और कचहरियों में लुटने से बचेगी। सबसे बड़ा लाभ तो प्रौढ़ शिक्षा द्वारा यह होगा कि करोड़ों लोग नए ढंग से देखने, सुनने और समझने के साथ-साथ अच्छा आचरण करने में समर्थ होंगे।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

हमारे करोड़ों देशवासी आज भी अशिक्षित और पिछड़े हुए हैं। सारे संसार के सामने हम इस कलंक को सिर झुकाए सह रहे हैं। भारत की उन्नति चंद नगरों को जगमग कर देने से नहीं होगी, उसकी सच्ची उन्नति का पैमाना तो यही ग्राम-समुदाय है जिसकी पढ़ने की आयु निकल चुकी, जो स्वयं पढ़ने के महत्त्व से अपरिचित हैं, जिसका तन-मन-धन नगरीय सभ्यता शताब्दियों से लूटती चली आ रही है। ऐसे अज्ञान और अशिक्षा के अंधकार में जीवन बिताने वाले करोड़ों भाइयों-बहनों के प्रति यदि हम आज सचेत और उत्तरदायी बनने की बात सोच रहे हैं, तो देश का बड़ा सौभाग्य है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/